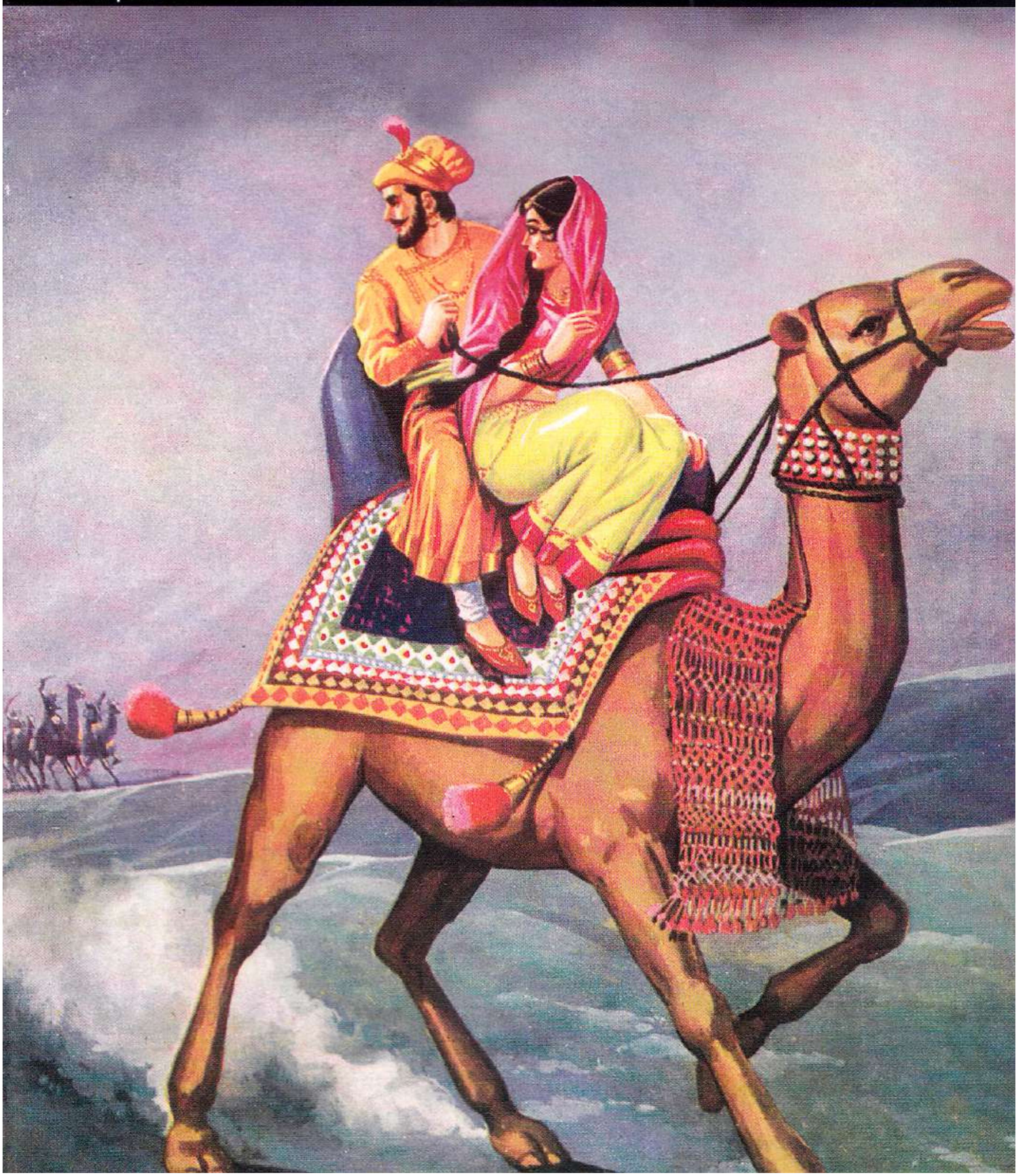
अमर चित्र कथा

ढोला और मारू

राजस्थान की प्रेम कहानी

Vol 776 | ₹90



तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके - अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य और पौराणिककथाएँ
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय उत्कृष्ठ साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

हास-परिहास और दंतकथाएँ
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

वीरांगना
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दिव्यदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

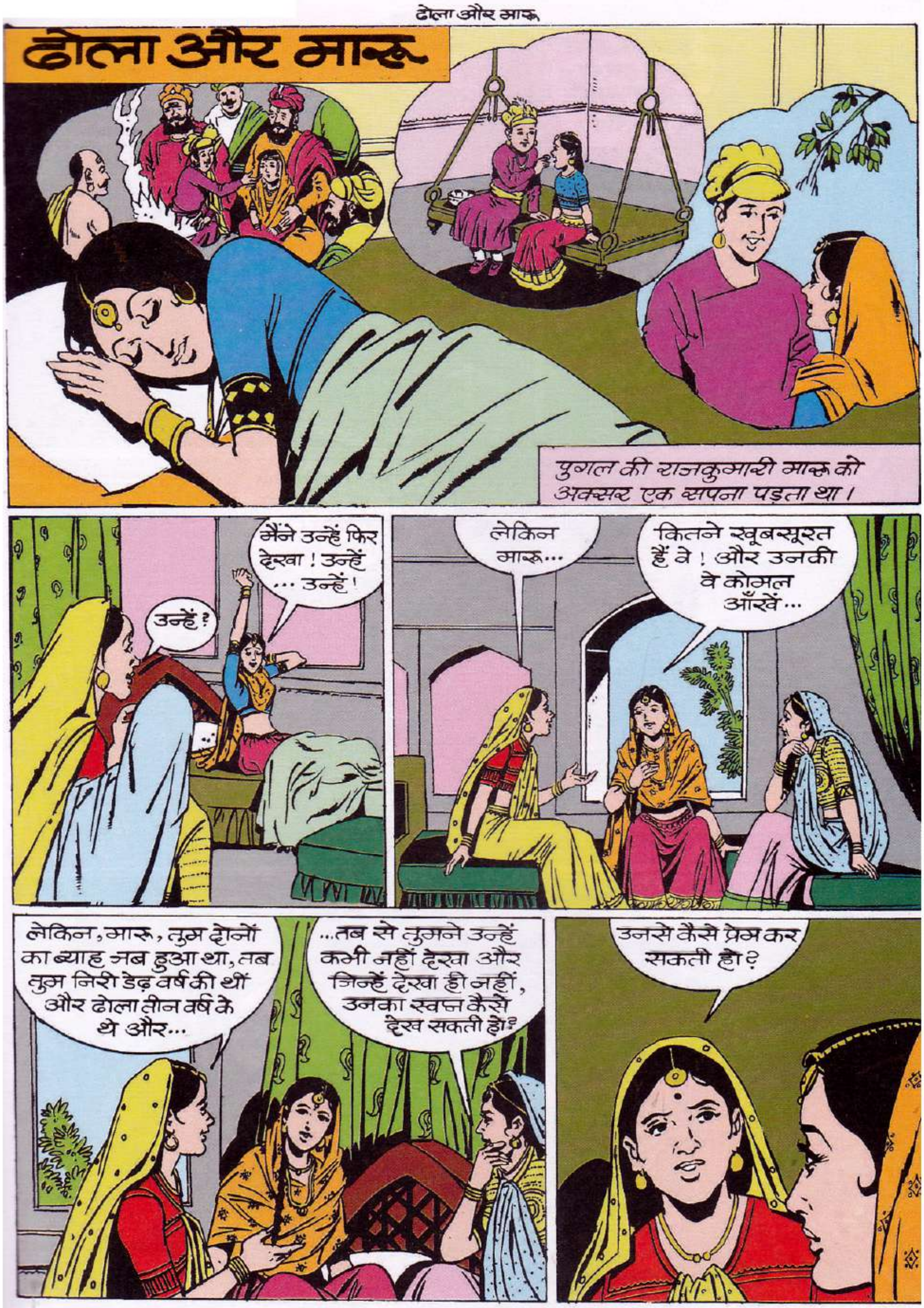
कथा	चित्र	संपादक
लोपामुद्रा	राम वाइरकर	अनंत पै

मुखपृष्ठ
प्रताप मुलिक

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

ISBN 978-93-90055-58-6

Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri East, Mumbai 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : +91-22 49188881/2
Email: customerservice@ack-media.com
Printed in India


ढोला और मारू
पुगल की राजकुमारी मारू को अक्सर एक सपना पड़ता था।
मैंने उन्हें फिर देखा ! उन्हें ... उन्हें !
उन्हें ?
लेकिन मारू...
कितने खूबसूरत हैं वे ! और उनकी वे कोमल आँखें...
लेकिन, मारू, तुम दोनों का ब्याह जब हुआ था, तब तुम निरी डेढ़ वर्ष की थीं और ढोला तीन वर्ष के थे और...
...तब से तुमने उन्हें कभी नहीं देखा और जिन्हें देखा ही नहीं, उनका स्वप्न कैसे देख सकती हो?
उनसे कैसे प्रेम कर सकती हो?


हालाँकि मैंने उन्हें तब से देखा नहीं है ...
... मेरा हृदय उन्हें हर पल याद करता है।
वह उन्हें बिसराने को तैयार नहीं।
ओह, प्यारी मारु, ढोला तुम्हें ज़रूर बुलायेंगे। ज़रूर!
ठीक तभी –
पी-ऊ
पी-ऊ
ऐ, पपीहा, तुझे गाना ही है...
... तो मेरे प्रियतम को मेरे पास लाने वाला गीत गा!

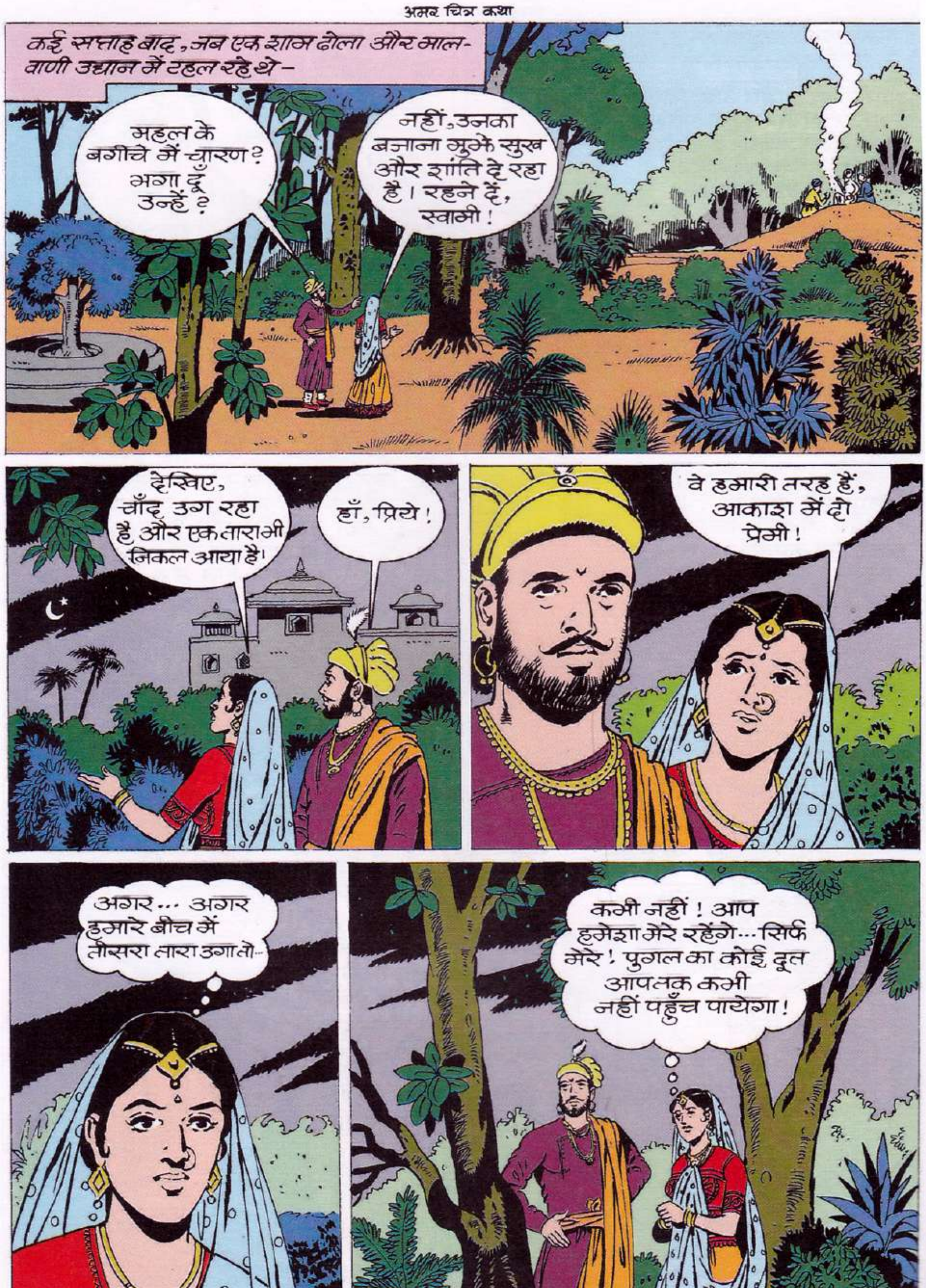

पपीहे, अपने पंख मुझे उधार दे दो, तो अपने पिया के पास उड़ कर जा सकूँ।
नहीं, मारू। हम पंख नहीं दे सकते।
लेकिन हमारे पंखों पर तुम अपने प्रियतम को संदेसा लिख सकती हो। हम तुम्हारी पाती वहाँ पहुँचा देंगे।
उससे काम नहीं बनेगा। तुम्हारे पंखों पर पानी गिरा तो स्याही धुल जायेगी!
ऐ, हवा, उस ओर बहो जहाँ मेरे प्रियतम हैं, फिर वापस आ कर मुझे छुओ!
इस बीच घोड़ों का एक व्यापारी मारू के पिता से मिलने आया। उन्होंने उससे कई घोड़े खरीदे थे।
प्रणाम, महाराज! मैं आपको धन्यवाद देने आया हूँ कि...


... कि... महाराज, वहाँ... वह युवती कौन है ?
मेरी बेटी मारू है। वह... आओ, बैठें !
मित्र, तुमने तो व्यापार में दूर-दूर की यात्रा की होगी ! कभी नरवर भी गये हो ?
हाँ, महाराज, मैं अभी नरवर से ही तो आ रहा हूँ !
अच्छा ! मेरी बेटी इस बात को नहीं जानती, लेकिन कई वर्षों से मैं नरवर के राजा नल के पास दूत भेज रहा हूँ, लेकिन वे दूत लौटे ही नहीं।
और न राजा नल के पास से ही कोई खबर आयी। उन्हें मारू को विदा कराना था। बचपन में ही उसकी शादी नरवर के राजकुमार ढोला से हुई थी !
महाराज, तो यह आपकी बेटी का मामला है ! मैंने नरवर में अफवाह सुनी थी कि पहले भी कोई शादी हुई थी !

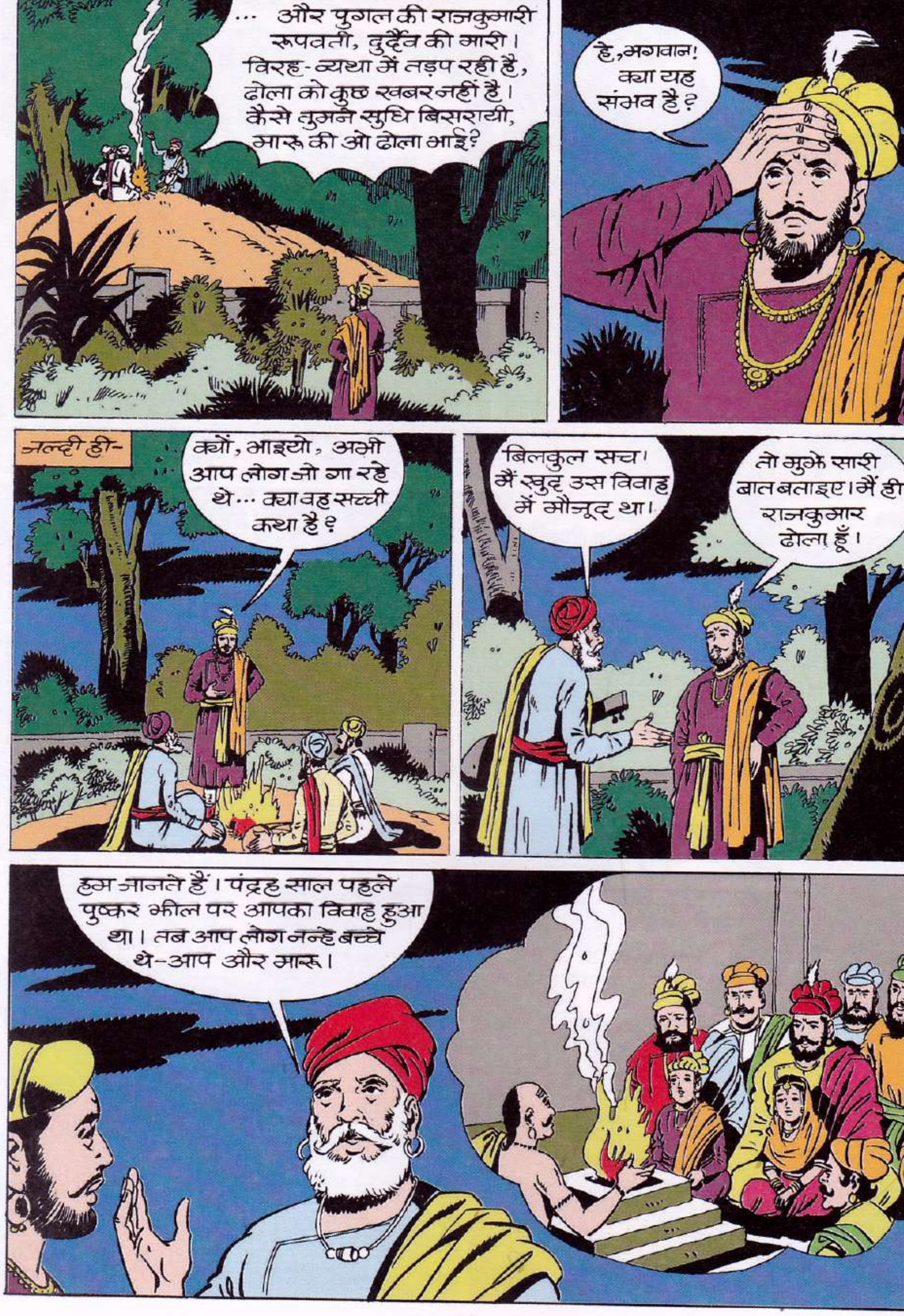

शादी...पहले भी ? तुम्हारा मतलब... कहीं यह तो...
हाँ, महाराज! राजकुमार ढोला ने...
... दूसरी शादी कर ली है। उनकी दुल-हिन है मालवाणी, मालवा के शक्तिशाली राजा की बेटी...
नहीं!
यह झूठ है... यह झूठ है...
बाद में-
धीरज धरो, मेरी बच्ची!
रोओ मत, मारू! मत रोओ!
माँ, भाग्य मुझसे रूठ गया और... और उसपर रीझ गया।
बाद में-
बात अब समझ में आयी। मालवा शक्तिशाली राज्य है। मालवा से दोस्ती गाँठने के लिए नल ने पहली शादी की बात गुप्त रखी।
क्या ढोला ने भी पहली शादी की बात बिसरा दी ?


मैं समझता हूँ, उसे भी याद नहीं। वैसे नरवर में एक अफवाह है।
राजकुमारी मालवाणी ने कई आदमियों को कारागार में डलवा दिया है।
वे निश्चय ही आपके दूत होंगे।
लेकिन पहली शादी की बात उसे कैसे पता चली?
हो सकता है, उसने भी अफवाहें सुनी हों, फिर सच्चाई पता लगा ली हो!
तो... क्यों न हम कुछ चारण नरवर भेजें, जो ढोला को मारू की याद दिला सकें!
उत्तम विचार है!

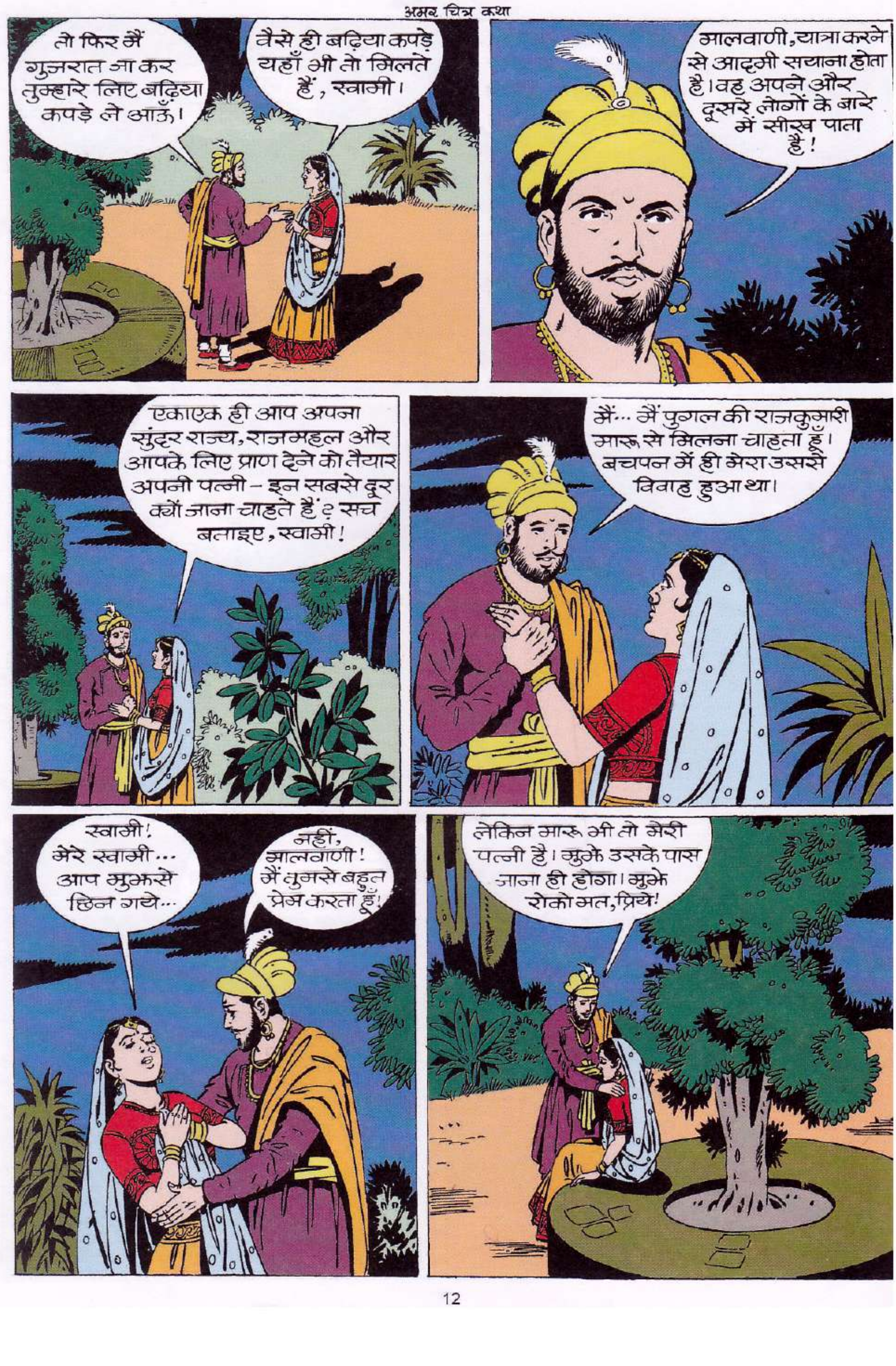

जब चारण महल में इकट्ठे हुए –
आप लोग जाइए और किसी भी तरकीब से नरवर में प्रवेश कर के ढोला को उसकी बचपन की दुलहिन के प्रेम और विरह के के दर्द-भरे गीत सुनाइए।
और मेरी ओर से उनसे कहना कि मैं विरह की अग्नि में जल कर कोयला बन गयी हूँ... वे आ कर मेरी राख उड़ा दें।
उनसे यह भी कहना कि शरीर के नष्ट हो जाने पर भी मेरी आत्मा उनमें वास करती रहेगी... हमेशा।
क्या उनके पास थोड़ा कागज और स्याही नहीं है? या आलस-वश नहीं लिखते? या उनके देश में संदेशवाहक बहुत महँगे होते हैं? अगर वे नहीं आये...
वे जरूर आयेंगे, राजकुमारी
जब हम उन्हें आपका संदेश देंगे तो वे उड़ कर आपके पास आयेंगे।
अगर वे नहीं आये, तो मैं होली की आग में जल मरूँगी।


कई सप्ताह बाद, जब एक शाम ढोला और माल-वाणी उद्यान में टहल रहे थे –
महल के बगीचे में चारण? भगा दूँ उन्हें?
नहीं, उनका बजाना मुझे सुख और शांति दे रहा है। रहने दें, स्वामी!
देखिए, चाँद उग रहा है और एक तारा भी निकल आया है।
हाँ, प्रिये!
वे हमारी तरह हैं, आकाश में दो प्रेमी!
अगर... अगर हमारे बीच में तीसरा तारा उगा तो...
कभी नहीं! आप हमेशा मेरे रहेंगे... सिर्फ मेरे! पुगल का कोई दूत आप तक कभी नहीं पहुँच पायेगा!


स्वामी, रात हो चली है। मैं भीतर भोजन का प्रबंध देखूँ?
हाँ, प्रिये! मैं बाद में आता हूँ।
मालवाणी के जाने के बाद -
चांदनी कितना शीतल है और हवा कितना सुखदायी!
ठीक तभी -
इक था नन्हा-मुन्ना ढोला।
?!
...राजकुँवर नरवर का भोला। पुष्करजी में ब्याह रचाया...
... मारू जैसा मानिक पाया, किंतु साथ ही उसे भुलाया।

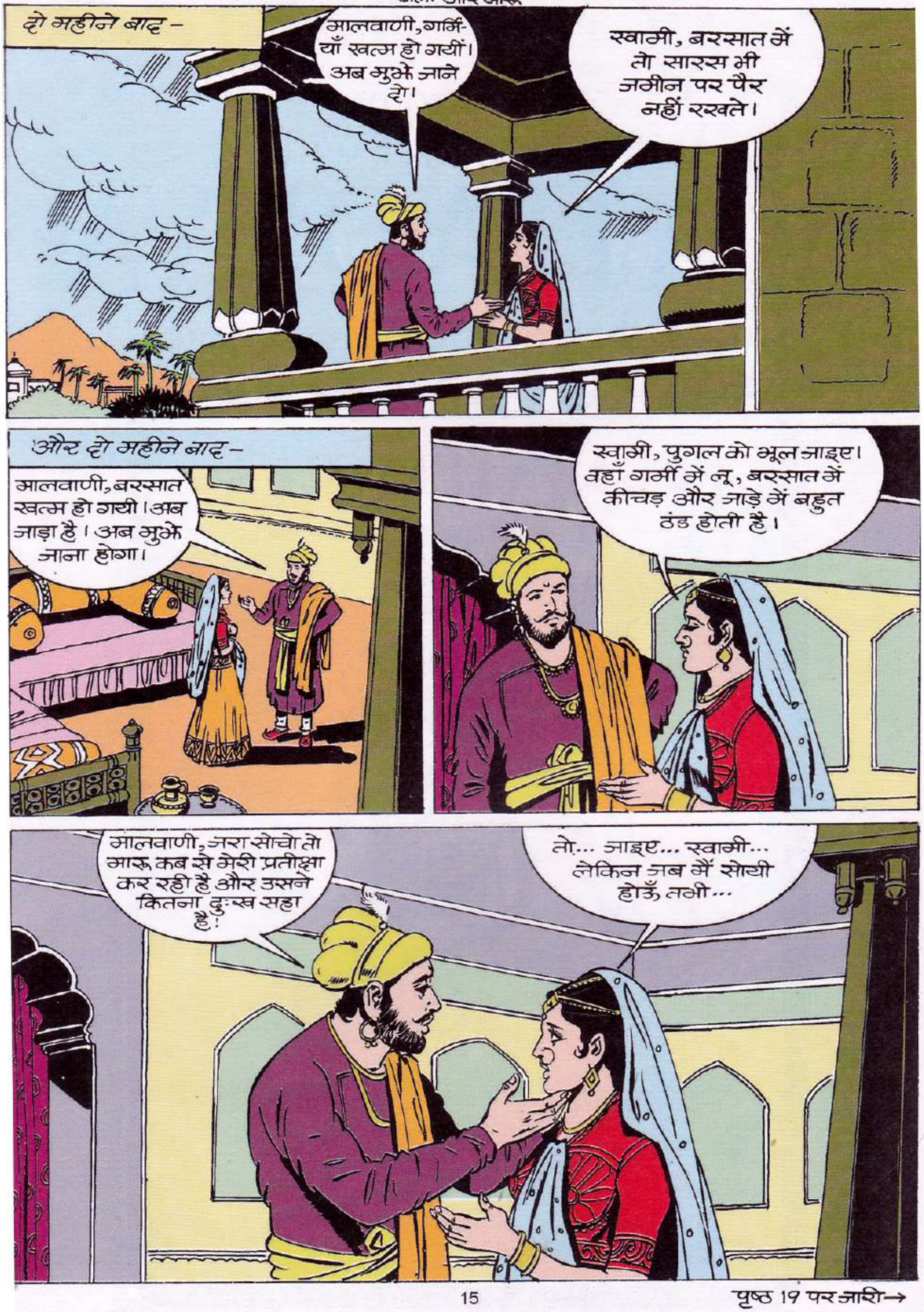

... और पुगल की राजकुमारी
रूपवती, दुर्दैव की मारी।
विरह-व्यथा में तड़प रही है,
ढोला को कुछ खबर नहीं है।
कैसे तुमने सुधि बिसरायी,
मारू की ओ ढोला भाई?
हे, भगवान! क्या यह संभव है?
जल्दी ही-
क्यों, भाइयो, अभी आप लोग जो गा रहे थे... क्या वह सच्ची कथा है?
बिलकुल सच। मैं खुद उस विवाह में मौजूद था।
तो मुझे सारी बात बताइए। मैं ही राजकुमार ढोला हूँ।
हम जानते हैं। पंद्रह साल पहले पुष्कर झील पर आपका विवाह हुआ था। तब आप लोग नन्हे बच्चे थे–आप और मारू।


काफी देर बाद-
स्वामी, वहाँ मैं आपकी प्रतीक्षा करती रही और आप यहाँ खोये-खोये से बैठे हैं। क्या बात है?
नहीं... कोई बात नहीं।
मालवाणी, मैं सोच रहा हूँ... कुछ दिनों के लिए नरवर से बाहर कहीं हो आऊँ। ईडर जा कर तुम्हारे लिए कुछ बढ़िया हीरे खरीद लाऊँ।
नहीं, स्वामी। मुझे हीरे-जवाहरात नहीं चाहिए। मेरे पास जो हैं, वही बहुत हैं।


तो फिर मैं गुजरात जा कर तुम्हारे लिए बढ़िया कपड़े ले आऊँ।
वैसे ही बढ़िया कपड़े यहाँ भी तो मिलते हैं, स्वामी।
मालवाणी, यात्रा करने से आदमी सयाना होता है। वह अपने और दूसरे लोगों के बारे में सीख पाता है!
एकाएक ही आप अपना सुंदर राज्य, राजमहल और आपके लिए प्राण देने को तैयार अपनी पत्नी – इन सबसे दूर क्यों जाना चाहते हैं? सच बताइए, स्वामी!
मैं... मैं पुगल की राजकुमारी मारू से मिलना चाहता हूँ। बचपन में ही मेरा उससे विवाह हुआ था।
स्वामी! मेरे स्वामी... आप मुझसे छिन गये...
नहीं, मालवाणी! मैं तुमसे बहुत प्रेम करता हूँ!
लेकिन मारू भी तो मेरी पत्नी है। मुझे उसके पास जाना ही होगा। मुझे रोको मत, प्रिये!


और जल्दी ही-
तुममें से कौन मुझे मेरी दुलहिन – पुगल की राजकुमारी – के पास ले चलेगा?
मैं ले जाऊँगा, राजकुमार ढोला। मैं ताकतवर हूँ। बढ़िया खाता हूँ और गंगा का शुद्ध जल पीता हूँ। सुख-दुःख दोनों मेरे लिए समान हैं। मैं ले चलूँगा आपको।
बस, मालिक, मुझपर काठी कस दें, गरदन में झुनझुनाती घंटियाँ बाँध दें और आप जब भी कहेंगे, मैं आपको मारू के पास ले चलूँगा।
शाबाश, दोस्त!

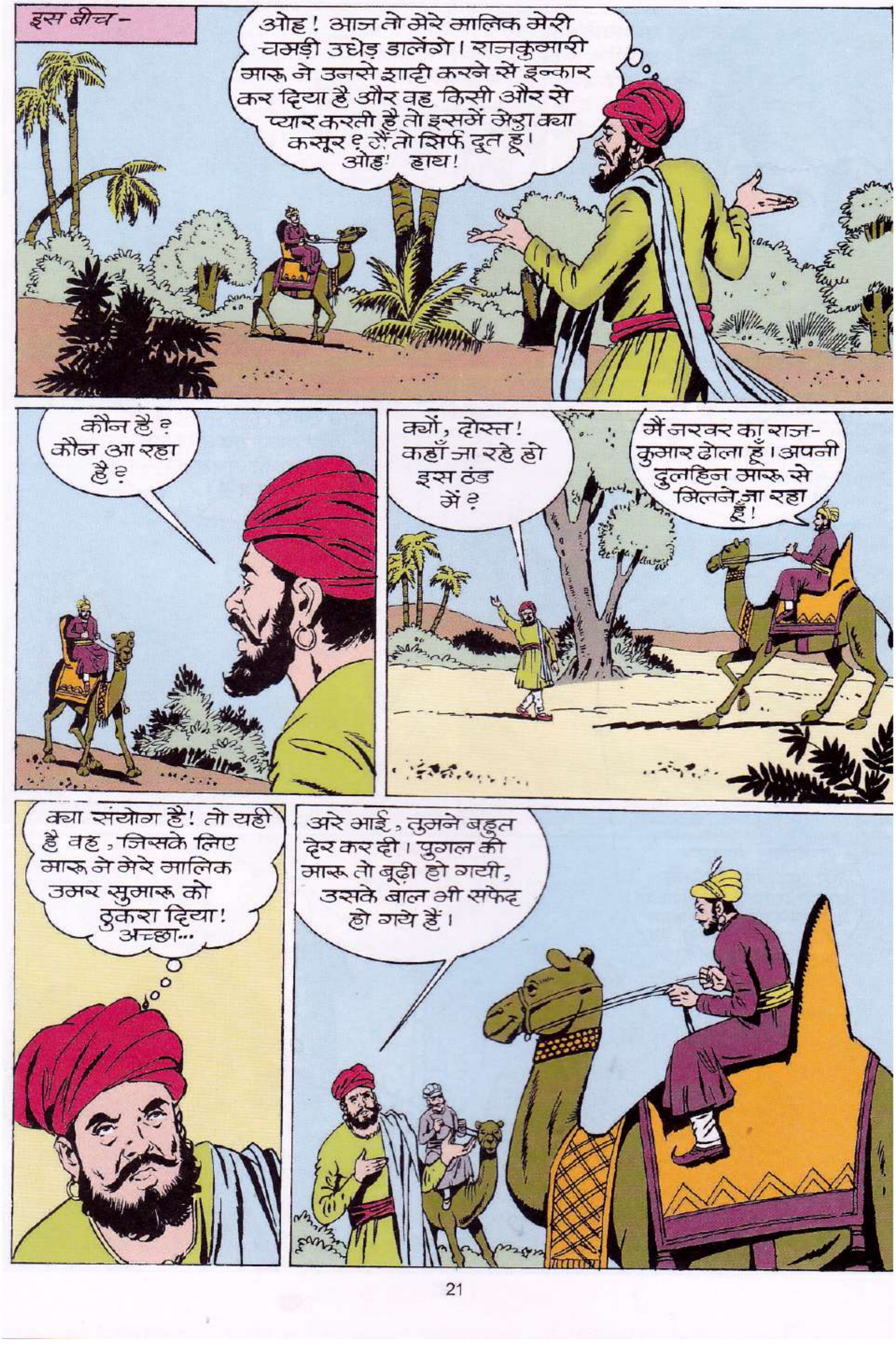

कुछ क्षण बाद –
भैया ऊँट! मुझपर तरस खाओ! मेरे स्वामी को मारू के पास मत ले जाओ!
लँगड़ेपन का बहाना करो!
अगर असलियत पता चल गयी तो मेरी पिटाई होगी, मुझे भूखा रखा जायेगा। लेकिन अगर मैं राजकुमार को उनकी दुलहिन के पास पहुँचा दूँ, तो मुझे बढ़िया खाना मिलेगा।
मैं तुम्हें बढ़िया खाना दूँगी, बरगद की छाँह में बाँधूँगी और सुगंधित तेल से तुम्हारी मालिश करूँगी। मैं वादा करती हूँ कि तुम्हें दागा भी नहीं जायेगा।
ये बड़े आकर्षक प्रस्ताव हैं। लेकिन, राजकुमारी, मैं अपने मालि दगा नहीं दे सकता। क्षमा करें।
बाद में, महल में –
स्वामी, उस रेगिस्तानी राज्य में अब लू बह रही होगी, अभी मत जाइए!
ठीक है!


दो महीने बाद –
मालवाणी, गर्मियाँ खत्म हो गयीं। अब मुझे जाने दो।
स्वामी, बरसात में तो सारस भी जमीन पर पैर नहीं रखते।
और दो महीने बाद –
मालवाणी, बरसात खत्म हो गयी। अब जाड़ा है। अब मुझे जाना होगा।
स्वामी, पुगल को भूल जाइए। वहाँ गर्मी में लू, बरसात में कीचड़ और जाड़े में बहुत ठंड होती है।
मालवाणी, जरा सोचो तो मारू कब से मेरी प्रतीक्षा कर रही है और उसने कितना दुःख सहा है!
तो... जाइए... स्वामी... लेकिन जब मैं सोयी होऊँ, तभी...

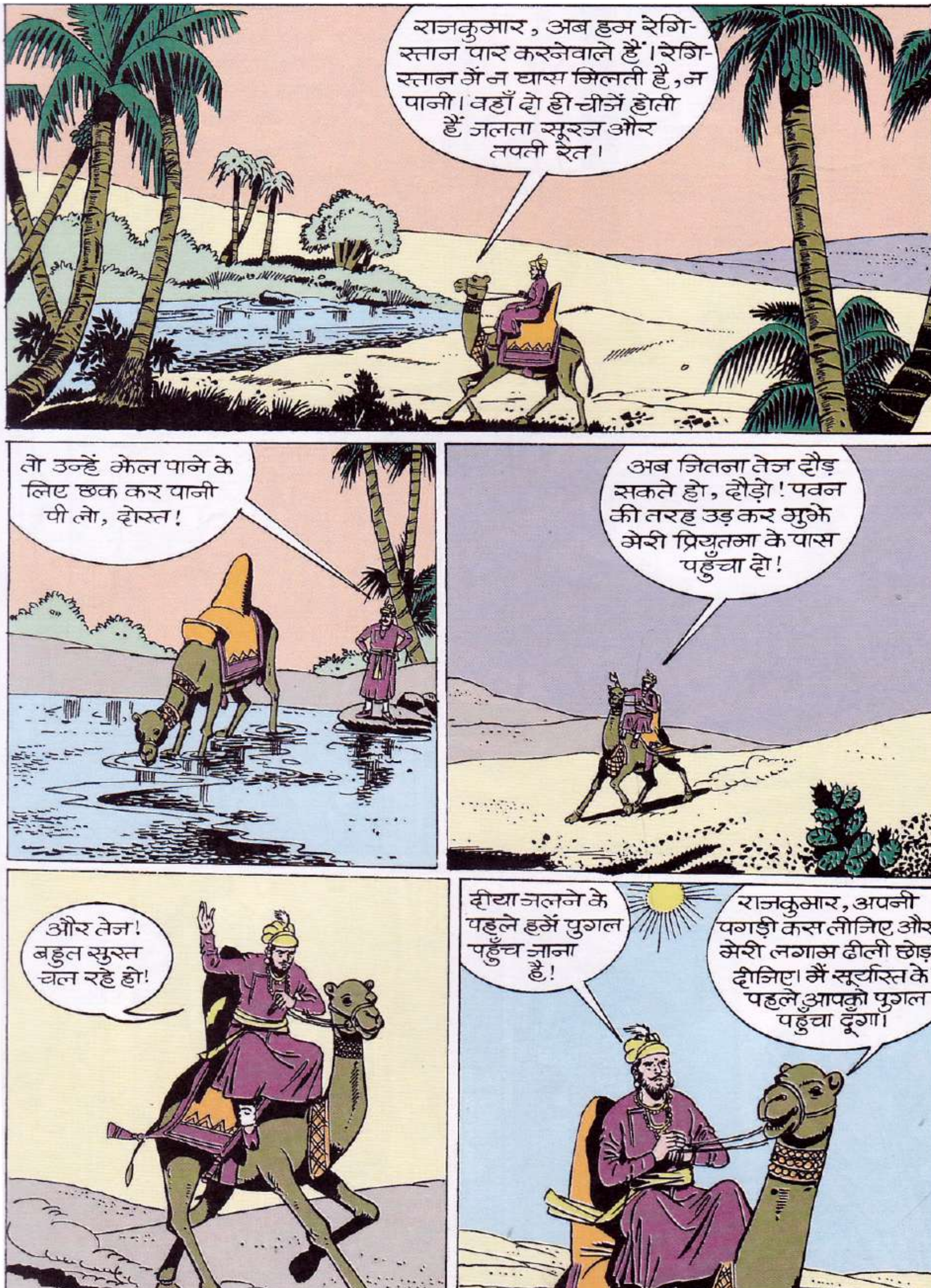
पृष्ठ 19 पर जारी→


और इस तरह-
राजकुमारी, आप पंद्रह दिनों से सोयी ही नहीं हैं ...
अपने स्वामी को अपने पास रखने के लिए जरूरत हुई तो... तो...
... लगातार महीनों ... जाग ... सकती हूँ ...
बेचारी मालवाणी! सो गयी आखिर!
अचानक-
ओह ... यह आवाज क्या थी? ऊँट की घंटियाँ! स्वामी...मेरे स्वामी कहाँ हैं?
वे चले गये।
ओह, मारू ... तो ऐसी होती है विरह-वेदना... प्रियतम के लिए घुलना?


लेकिन कुछ घंटे बाद मीलों दूर -
अरे, यह तो मालवाणी का तोता मेरा पीछा कर रहा है! यानी उसने अभी भी कोशिश नहीं छोड़ी है।
राजकुमार, राजकुमार! तुरंत घर लौट चलो! मालवाणी अचेत हो कर गिर पड़ी और मर गयी।
तो जो मैं कहूँ वैसा करो, भले तोते! वापस जाओ और नौ मन चंदन की लकड़ियाँ लेकर सम्मान के साथ मालवाणी का दाह-संस्कार कर दो।
प्यारे राजकुमार, मैंने झूठ कहा। मैं जानता हूँ, कोई भी चीज मारू से मिलने से नहीं रोक सकती तुम्हें। क्षमा करो।
तुम्हारी मनोकामनाएँ पूरी हों, लेकिन अपनी दासी मालवाणी को भूलना मत।


इस बीच -
ओह! आज तो मेरे मालिक मेरी चमड़ी उधेड़ डालेंगे। राजकुमारी मारू ने उनसे शादी करने से इन्कार कर दिया है और वह किसी और से प्यार करती है तो इसमें मेरा क्या कसूर? मैं तो सिर्फ दूत हूं। ओह! हाय!
कौन है? कौन आ रहा है?
क्यों, दोस्त! कहाँ जा रहे हो इस ठंड में?
मैं नरवर का राजकुमार ढोला हूँ। अपनी दुलहिन मारू से मिलने जा रहा हूँ!
क्या संयोग है! तो यही है वह, जिसके लिए मारू ने मेरे मालिक उमर सुमारू को ठुकरा दिया! अच्छा...
अरे भाई, तुमने बहुत देर कर दी। पुगल की मारू तो बूढ़ी हो गयी, उसके बाल भी सफेद हो गये हैं।

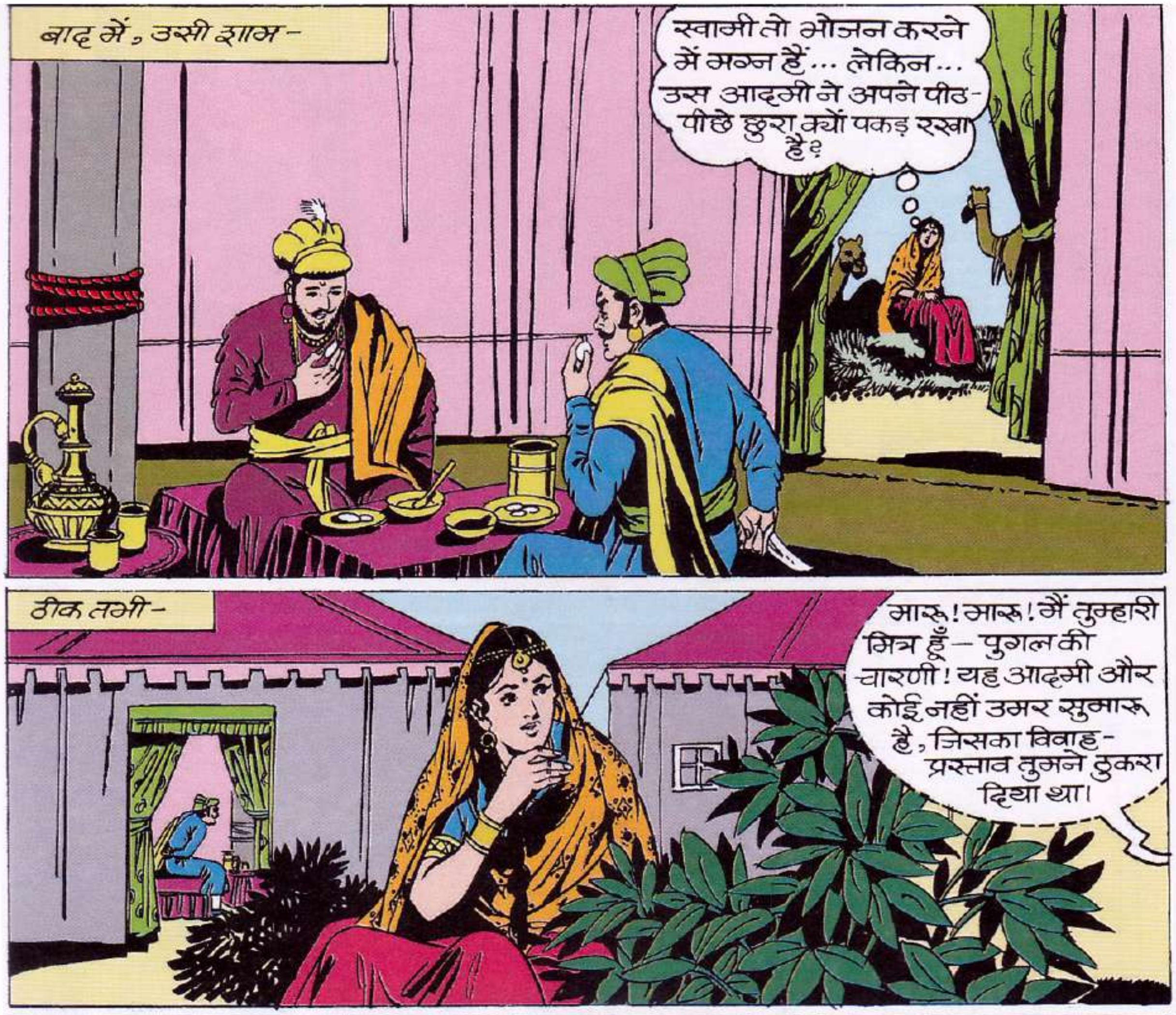

क्या यह संभव है? नहीं... कभी नहीं... फिर भी...
राजकुमार ढोला! राजकुमार ढोला!
मैं आपको पहचानता हूँ, राजकुमार। मेरा नाम बिस्सू है। मैं पुगल से आया हूँ। इसकी बात पर विश्वास मत कीजिए।
जब आपकी शादी हुई थी, तब आप तीन साल के थे और मारू डेढ़ की। वह आपकी तरह ही युवा है।
इसलिए जाइए। जैसे भगवान शिव ने अपनी जटाओं में गंगा को बसा रखा है, वैसे आपके हृदय ने मारू के प्रेम को बसा रखा है!
मैं तुम्हारा आभारी हूँ, बिस्सू दोस्त!

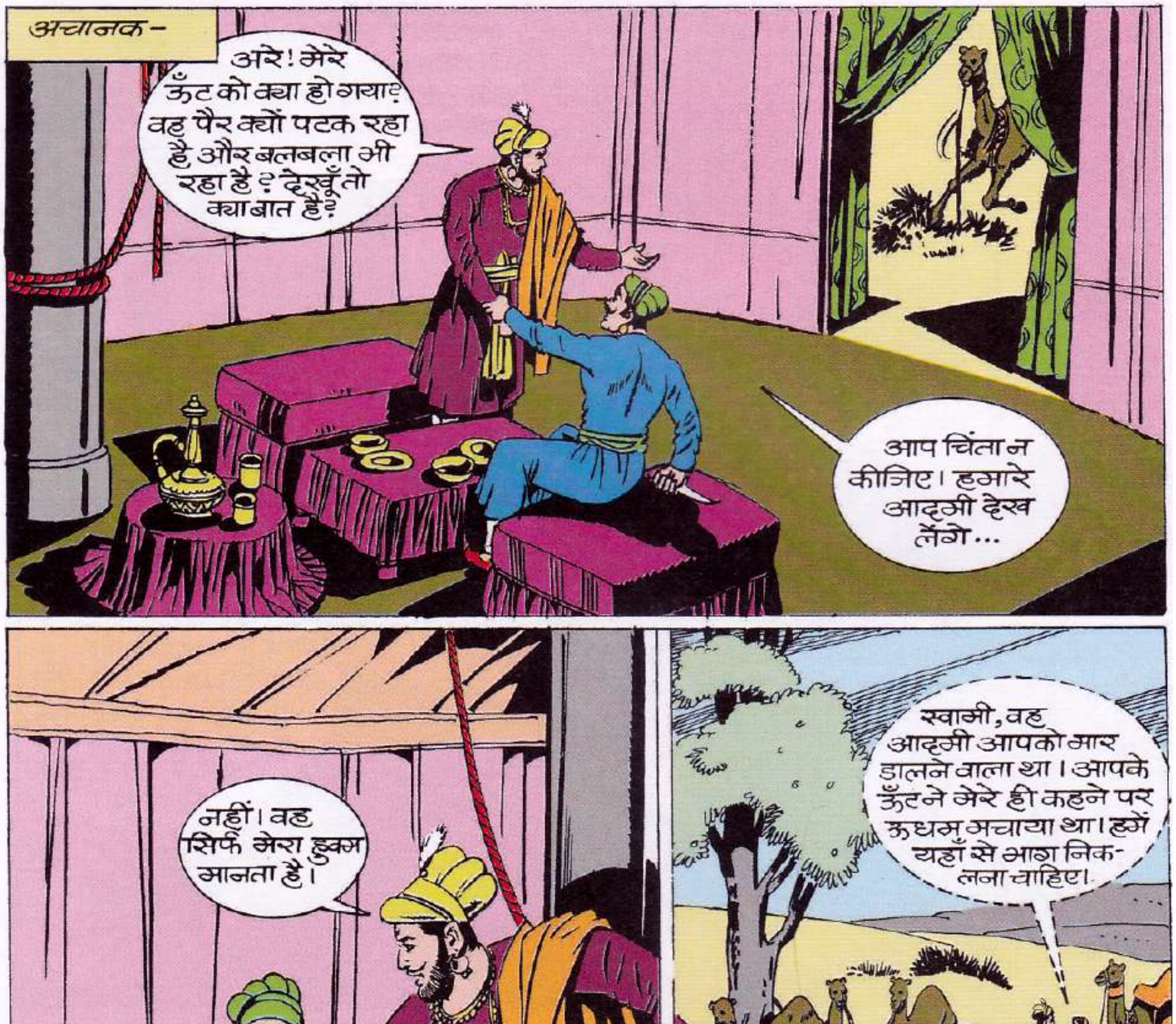

राजकुमार, अब हम रेगिस्तान पार करनेवाले हैं। रेगिस्तान में न घास मिलती है, न पानी। वहाँ दो ही चीजें होती हैं जलता सूरज और तपती रेत।
तो उन्हें झेल पाने के लिए छक कर पानी पी लो, दोस्त!
अब जितना तेज दौड़ सकते हो, दौड़ो! पवन की तरह उड़ कर मुझे मेरी प्रियतमा के पास पहुँचा दो!
और तेज! बहुत सुस्त चल रहे हो!
दीया जलने के पहले हमें पुगल पहुँच जाना है!
राजकुमार, अपनी पगड़ी कस लीजिए और मेरी लगाम ढीली छोड़ दीजिए। मैं सूर्यास्त के पहले आपको पुगल पहुँचा दूँगा।


और जल्द ही पुगल में –
पिताजी, माताजी, मैं आ गया!
अरे, सच! ढोला! जाओ, मारू तुम्हारी प्रतीक्षा में है।
मारू, जल्दी सज-सँवर लो! आखिर ढोला आ ही गये...
मारू!


मारू! मैं हूँ,
मैं – ढोला!
अब तुम्हें
दूर नहीं
करूँगा।
यह क्या मारू, तुम्हारा
शरीर तो अचानक
कुंदन की तरह दम-
कने लगा?
स्वामी...
... गर्मी में मेढक मुर्दा हो
जाते हैं, पर वर्षा होते ही
उनमें जैसे प्राण
लौट आते हैं।
आपके
आगमन ने वर्षा
की तरह मुझमें
प्राण- संचार कर
दिया।


सुख से भरे पंद्रह दिनों बाद –
मारू को अपने घर ले जाने की अनु-मति दें। आपके प्यार और आतिथ्य के लिए धन्यवाद!
माँ-पिताजी, मुझे आशीर्वाद दीजिए!
बाद में, राह में –
अरे, आप अकेले ही हैं?
अपने आदमी आगे भेज दिये हैं!
मैं इस इलाके का सरदार हूँ। बहुत गर्मी है आज तो। आइए, मेरे खेमे में थोड़ा विश्राम कर लें।
जरूर! आपकी बड़ी कृपा है।


बाद में, उसी शाम-
स्वामी तो भोजन करने में मग्न हैं... लेकिन... उस आदमी ने अपने पीठ-पीछे छुरा क्यों पकड़ रखा है?
ठीक तभी-
मारू! मारू! मैं तुम्हारी मित्र हूँ – पुगल की चारणी! यह आदमी और कोई नहीं उमर सुमारू है, जिसका विवाह-प्रस्ताव तुमने ठुकरा दिया था।
वह ढोला को मारने ही वाला है। जल्दी! ढोला को जल्दी वहाँ से हटा लो!


अचानक –
अरे! मेरे ऊँट को क्या हो गया? वह पैर क्यों पटक रहा है, और बलबला भी रहा है? देखूँ तो क्या बात है?
आप चिंता न कीजिए। हमारे आदमी देख लेंगे...
नहीं। वह सिर्फ मेरा हुक्म मानता है।
स्वामी, वह आदमी आपको मार डालने वाला था। आपके ऊँट ने मेरे ही कहने पर ऊधम मचाया था। हमें यहाँ से भाग निकलना चाहिए।


लेकिन-
ऊँट के भागने की आवाज़! वे भाग निकले हैं! पीछा करो!
आदमी को मार डालो! औरत मुझे ज़िंदा चाहिए। जल्दी!
तेज़! और तेज़, दोस्त!
अंत में -
नरवर का दरवाज़ा। हम बच गये!
हाँ, मालिक! हम बच गये। आप क्या समझते थे, मैं आपपर आँच आने दूँगा?

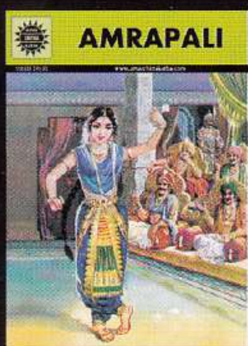

और जल्द ही-
मारू, बिटिया! जो हुआ उसके लिए मुझे क्षमा कर दो!
पिताजी, यह तो भाग्य का लेखा था।
मालवाणी...
इतने दिन तुम्हीं ने स्वामी को प्यार दिया, उनकी सेवा और देख-भाल की। बहन मैं तुम्हारी कृतज्ञ हूँ।

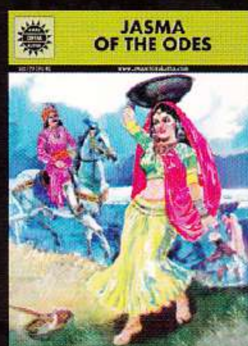

ओह, मारू! मुझे क्षमा करो·
क्षमा की क्या बात है! आओ, हम मिल-जुल कर सुख से रहें।
जहाँ प्रेम होता है, वहाँ सुख बसता है।
और फिर–
हमारे बच्चे हमेशा इसी तरह सुखी रहें।

ढोला और मारू

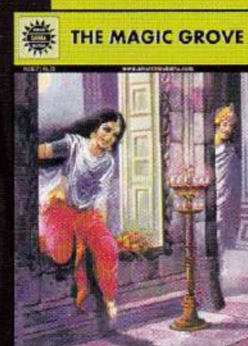
"रायलशन में पुगल की राजकुमारी मारू, राजकुमार ढोला से शादी करती है जब वे दोनों शिशु होते हैं। वे अपने माता-पिता के साथ रहना जारी रखते हैं, जब तक कि वे बहुत ज्यादा साइडर नहीं होते। मारू ढोला के सपने देखते हुए बड़ा हुआ। उसे एक अजीब सा झटका लगता है जब वह सुनती है कि ढोला ने दूसरी लड़की से शादी कर ली है और उसे याद भी नहीं है। जब वह ढोला को संदेश भेजने की कोशिश करती है, तो उसकी नई पत्नी उन्हें स्वीकार करती है और धोला को पता नहीं चलने देती। हार्टब्रोकन, मारू ने खुद को होली की आग में फेंकने का फैसला किया, अगर वह तब तक ढोला से नहीं सुनती है। ढोला और मारू का प्रेम राजस्थान में बेहद लोकप्रिय है। यह, अमर चित्र कथा संस्करण, एक लोकप्रिय गीत से लिया गया है।

ए सी के: के अन्य दंतकथाएँ और हास्य कथाएँ:

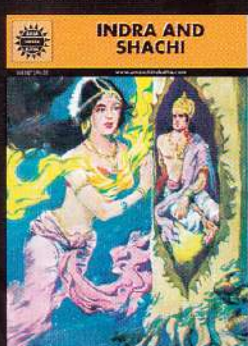




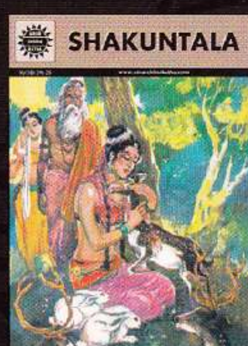




और भी देखें:



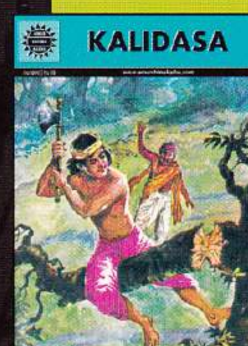
महाकाव्यों और
पौराणिक कथा



भारतीय क्लासिक्स



बहादुर दिल



दूरदर्शी

www.amarchitrakatha.com ऑनलाइन पर खरीदें

ISBN 978-93-90055-58-6